आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2568 • उदयपुर, बुधवार 05 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

फेफड़ों में था संक्रमण, बची अनुज की जान

मन्दसौर (मध्यप्रदेश) जिले के एक छोटे–से गांव के निवासी प्रकाश ग्वाला का 13 वर्षीय पुत्र अनुज सितम्बर, 2021 में तेज बुखार से ग्रस्त हो गया। दिनों–दिन उसका स्वास्थ्य गिर रहा था। चिन्तातुर दिहाड़ी मजदूर पिता ने इलाज के लिए कई अस्पतालों में दिखाया पर बेटे की हालत नहीं सुधरी। एक निजी हॉस्पीटल के चिकित्सक ने कुछ जांचें कराने की सलाह दी। जिसके लिए प्रकाश को अपनी पुश्तैनी डेढ़ बीघा जमीन भी बेचनी पड़ी। जांचों से ज्ञात हुआ कि अनुज को डेंगू के चलते फेफड़ो में संक्रमण है। जो पस व पानी से प्रभावित है।

इसका लीवर व किडनी पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इसका शीघ्र इलाज जरूरी है। वे बेटे को लेकर उदयपुर के गीताजंली हॉस्पीटल आए जहां जांच के बाद 1.50 से 2 लाख रु. का चिकित्सा खर्च बताया गया। गरीब पिता सन्न रह गए। तभी किसी परिचित ने नारायण सेवा की जानकारी दी। वे संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल से मिले। जिन्होंने हरसंभव मदद का भरोसा दिया।

संस्थान ने हॉस्पीटल मैनेजमेंट और सम्बन्धित डॉक्टर से अनुज की बीमारी की जानकारी लेकर 1,68,000 रु. का चिकित्सा व दवाई शुल्क जमा कराया। 15 नवम्बर, 2021 को अनुज के फेफड़ों में संक्रमण का सफल ऑपरेशन हुआ। वह अब पूर्ण स्वस्थ है। पिता प्रकाश और पूरे परिवार ने बेटे के नवजीवन के लिए संस्थान को उसके बहुमूल्य सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया है।

रुकेगा नहीं हरु किसान

गरीब हरूराम भील (30) अपने गांव पोकरण राजमथाई (जैसलमेर) में ट्रेक्टर ड्राइविंग करके परिवार चला रहा था कि जुताई के लिए हरियापुर गांव गया। ट्रेक्टर–टोली लेकर किसान के खेत में जुताई के लिए पहुंचा। ट्रोली से कल्टीवेटर को उतारते हुए वह पांव पर अचानक गिर गया। दोनों पांव घटना स्थल पर ही क्षतिग्रस्त हो गए। आस–पड़ोस के लोगों ने गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति कैलाश राठी की मदद से उसे जोधपुर के गोयल हॉस्पीटल में भर्ती करवाया जहां 3 माह तक इलाज चला। इस दौरान बांया पांव काटना पड़ा और दांये पांव में स्टील प्लेट और रोड़ डाली गई लेकिन वह पांव अब भी टेढ़ा है। जैसे–तैसे हरूराम अपने पिता शंकरराम की मदद से घर पहुंचा लेकिन वो पूरी तरह से टूट चुका था। जीने की हिम्मत खो चुका था।

करीब एक माह पूर्व समाज सेवी अखिलेश दवे नारायण सेवा संस्थान के दिव्यांग सहायता कार्यों की जानकारी देकर उसे उदयपुर लाए। संस्थान के प्रोस्थेटिस्ट एवं आर्थोटिस्ट डॉ. मानस जी रंजन साहू ने कृत्रिम पांव लगाकर उसे कदम दर कदम चलने की सौगात दी तो भावी जीवन को लेकर हरूराम में उम्मीद की एक नई किरण जगी तथा संस्थान व सहयोगियों का धन्यवाद अर्पित किया अब वह गांव में चल फिर रहा है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मांगू मात अबहु देहु तोहि।
राम विरह जनि मारसी मोहि।।

हाँ, कि मेरा माथा भी तेरे पतिदेव का। कभी महिलाएँ प्रणाम करती है तो क्या बोलते हैं– सौभाग्यवती भवः। अर्थात् आपके पतिदेव दीर्घायु होवे। सुखी आयु होवे, आप भी दीर्घायु होवे। आप भी सुखी आयु होवे। केवल सौभाग्यवती भवः में पतिदेव को ही आशीर्वाद नहीं है। जो देवियाँ हमें धोक देती है उनको भी आशीर्वाद है। उनके परिवार को भी आशीर्वाद है। ये आशीर्वाद बहुत फलता है– बाबू।

देखो जैसे ये किसी ने बीज बोया गुलाब का। गुलाब लग गया, अलग–अलग कलर के। बीज बोया, अच्छा बीज बोया। पण कैकेयी के बीज अच्छे नहीं है। कैकेयी कहती है– पहले तो कहते हैं मांगो मांगो रामजी की सौगन्ध। बार–बार इतनी कठोर हो गई। जैसे पत्थर हो गई। भाटो वेईग्यो भाटो। हाँ, कहते है भाटा जसान कई वेईगी। अरे! कैकेयी बचे तो ये पौधा भी अच्छा। जो, इनमें मनुष्य जैसी अक्कल नहीं है।

लेकिन एक बीज बोया अमरूद का। एक बीज बोया, ओहो ये तना हो गया। ये डाली हो गई, ये मोटे– मोटे पत्ते हो गये। ये अमरूद का फल भी लग गया। और अमरूद को तोड़ लिया। अब कुछ भी करो, इसको डाली पे लगा नहीं सकते। करोड़ों रूपया खर्च कर दो। इस डाली पर तो ये अमरूद लग नहीं सकता। जैसे ये अमरूद डाली पे लग नहीं सकता। दशरथ जी ने कहा– कैकेयी, तू तो मेरे प्राण लेके रहेगी ऐसा लगता है। अरे भरत क्या राज्य करेंगे? नहीं करेंगे। तेने भली आप मांग लियो, वरदान मांग लियो। क्या भरत राम के बिना रह पायेंगे? नहीं रह पायेंगे। क्या मेरे प्राण राम के बिना रह पायेंगे? नहीं रह पायेंगे। तू विधवा हो जायेगी। फिर भी कैकेयी जो मंथरा ने ऐसा जाल में फंसाया। जैसे रेगिस्तान में मृग मारिचिका बन के दषरथ जी दौड़ रहे हैं। कहीं तो पानी मिले। पण मृग मारिचिका जैसा पानी नजर तो आता है लेकिन मिलता नहीं। दषरथ जी फिर अचेत हो गये।

शुक्रिया के शब्द नहीं है

उसे जिद्द थी दुनिया बदलने की। पर वो नहीं बदल पाया। उसने हार नहीं मानी और खुद की दुनिया बदल दी। चेहरे पे अपनी स्थित तेज लिये हुए ये है तेजाराम। वे कहते हैं –मेरा नाम तेजाराम है, ग्राम बडाईली है, जिला नागौर, राजस्थान। मैं बचपन से पोलियो ग्रसित था। खेलने – कूदने के लायक भी नहीं था। और उसके अलावा में मम्मी– पापा पे बोझ बनकर रहता था। मैं चल फिर नही पाता था। पांव बिल्कुल मुड़ा हुआ था। दोस्त और पड़ोसी सब ताने मारते थे। बेसहारा है ये कुछ भी मतलब नहीं है मर जाये तो ठीक है।

पोलियो ने इनसे बहुत कुछ छीना। मगर मिली तो लोगों की उपेक्षा या दुत्कार। और उसकी जिन्दगी में उजाला आना बाकी था। वो आया नारायण सेवा संस्थान बनकर। नारायण सेवा संस्थान का नागौर का कैम्प लगा था। एड्रेस मालूम चला कैम्प के द्वारा। उदयपुर जा के ऑपरेशन कराया था। तीन जगह पे मैं और मेरे पापा दोनों ही उधार रहे थे छः महीने तक। तो वहीं भी एक पैसा भी नहीं लगा था। नहीं ऑपरेशन का लगा, मैं गरीब घर का हूँ। कहीं पे दूसरे प्राईवेट जगह पे ऑपरेशन नहीं करवा सकता था। अच्छा हुआ अभी चलने लायक हो सका। नारायण सेवा संस्थान ने तेजाराम को इस काबिल बनाया कि वो अपनी मंजिल की तरफ कदम बढ़ा सके। वहां पे इतना अच्छा स्टॉफ था। डॉक्टर सब इतने अच्छे थे और प्रशान्त जी सर दिन में हमको एक बार मिलकर जाते थे।

छः महीने तक मैं वहां पे रूका था। तो भी वहां पर कोई फैमिली वाले या गांव के या दोस्तों की किसी की याद नहीं आई। सिर्फ यही नहीं संस्थान ने उसकी योग्यता को निखारा और मेरे को यहां पर कम्प्युटर की ट्रेनिग दिया गया। बिल्कुल निःशुल्क फिर उसके बाद मेरा भी बीएसएनएल कॉल सेन्टर में मेरी जॉब लग गया। तेजाराम अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में अब अपनी समस्या भूलकर लोगों की समस्याए सुलझाता है। मैं अब अजमेर में रहता हूँ अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में जॉब करता हूँ, बास और स्टॉफ वाले सब खुश हैं मेरे से। अब मैं मेरे परिवार का पालन – पौषण कर रहा हूँ और मेरा परिवार पूरा खुश है। तकलीफें छूट गई और चेहरा मुसकराने लगा। संस्थान का मैं इतना आभारी हूँ नारायण सेवा संस्थान को शुक्रिया कहने के लिए तेजाराम के पास शब्द नहीं है। और उसकी निःशब्द मुसकान बहुत कुछ कहती है। एक नहीं हजार शुक्रिया, बस शुक्रिया।

सम्पादकीय

एक संत कवि की पंक्ति है – 'करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। यानी अभ्यास के द्वारा कोई भी अपने स्वरूप का परिवर्तन कर सकता है। अपात्र या अयोग्य व्यक्ति भी सुपात्र या सुयोग्य बन सकता है।यों तो हरके व्यक्ति में अनेक अच्छाइयां होती ही है। तथा कमियों की भी कमियाँ नहीं है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति अपनी अच्छाई का बखान तो करता रहता है। पर स्वयं की कमी को स्वीकार नहीं कर पाता । यह मानवीय कमजोरी है। जो अपनी कमजोरी या कमी को नहीं देख पाता उसमें सुधार की गुंजाइश क्षीण हो जाती है किसी भी व्यक्ति को स्वयं को सुधारना हो, समाजोपयोगी व मानवोचित बनाना हो तो सर्वप्रथम तो को उसे अपनी कमियों को पहचानना होगा। उसके बाद उन कमियों का विश्लेषण करके उन्हें त्यागने का मन बनाना होगा। फिर प्रारंभ होता है अभ्यास से अच्छाइयों का अंगीकरण। यह कार्य भले दुष्कर है पर अभ्यास से हर फल की प्राप्ति संभव है। अभ्यास वह क्रिया है जो परिमार्जन करती ही है।

कुछ काव्यमय

जो जागा है
वह मंजिल को पायेगा।
जिसने खुद को परखा है
वो देर–सवेर
सफलतापथपर बढ़ जायेगा।
बस भावों में बसाले
बढ़ने की भावना।
खुल जायेंगी सारी संभावना।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

धर्म की रेल

महाराज मैंने तो आज से 31 साल पहले 4 कागज लिए थे। कार्बन लगाये थे। सोचा मैं चार भाइयों को अपने मन की बात लिखूंगा एक कागज मेरे पास रह जायेगा, तीन कागज मैं मित्र को भेज दूंगा। सबसे पहले लिखा था "अपनों से अपनी बात" पराया कोई है नहीं बाबू। आपने कल सुना। इन्सान जी अपने पौत्र के अपहरण का दुःख भूल गए। कल आपने देखा वो घायलों को बचाने के लिए रक्तदान कर रहे हैं। कहीं प्राणदान कर रहें है।

कहीं आशीर्वाद का दान कर रहे हैं। कोई औषधि का दान कर रहे हैं, पर कुछ ऐसे अभागे लोग भी इस दुनियाँ में हैं, जो नहीं समझते धर्म को। नहीं समझते ईश्वर क्या होता हैं? नहीं समझते कर्म फल को? किसी ने पूछा

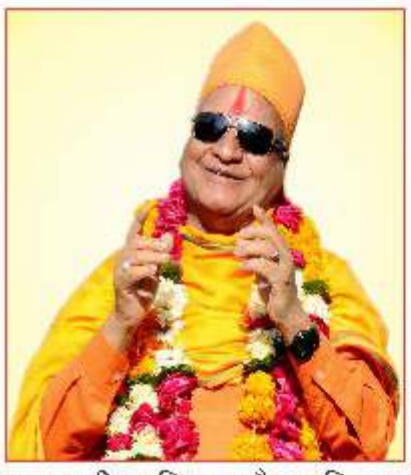

था बाबूजी आस्तिक और नास्तिक में पहचान क्या हैं? हे प्रभो! कहा गया "जो कर्म फल को नहीं मानता वो सबसे बड़ा नास्तिक" है। जो भगवान को नहीं मानता वो सबसे बड़ा नास्तिक है। और जो ये नहीं मानता कि कभी ना कभी मौत आयेगी वो सबसे बड़ा नास्तिक है। इसलिए कहा दो बात को याद रख, जो चाहे कल्याण, इक भगवान को और दूसरे मौत को। भगवान को याद रखना

परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।
सेठ की कलम
कान पर टंगी रहेगी।
और कल की पेशी भी
पड़ी रहेगी।

आपका हमारा वारंट कट कर आ जावे। उसके पहले आओ, आज को सफल करलें। वर्तमान को जिन्दाबाद कर दें।

आनन्द की लहरें फैला दें क्योंकि ये 10 गुणों की रेल चल रही है। ये धर्म की रेल चल रही है। धर्म के 10 लक्षणों की रेल चल रही है। आओ धर्म की रेल में बैठें, व्यवहार की रेल में बैठें।

–कैलाश 'मानव'

आज्ञा मानने से लाभ

जीवन में कितने ही धन व ऐश्वर्य की संपन्नता हो, लेकिन यदि मन में शांति नहीं है तो वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता। जिसके पास धन और भौतिक सुविधाओं की कमी है, पर उसका मन यदि शांत है तो वह व्यक्ति वास्तव में परम सुखी है। वह हमेशा मानसिक असंतुलन से दूर रहेगा। सुख का अंत दुख से होता है और दुख का अंत सुख से होता है, क्योंकि सुख में व्यक्ति अकर्मण्य हो जाता है और दुख में अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए आचरण करता है। संस्कारी व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र का निधि है। ज्ञानार्जन और धनार्जन यदि परमार्थ के लिए किया जाए, तो वही ज्ञान और धन सार्थक है। सिर्फ अपने उपयोग के लिए अर्जित धन और ज्ञान दोनों का कोई महत्व नहीं।

माता– पिता को चाहिए कि बच्चों को अच्छे संस्कार दें, ताकि वे

अच्छे नागरिक बनकर देश और समाज की प्रगति में भागीदार बनें । मनुष्य को कम बोलना और मीठा बोलना आ जाए तो जीवन ही सार्थक हो जाए। मनुष्य पारिवारिक एवं कर्मक्षेत्र की वेदनाओं से घबराकर जीवन को व्यर्थ समझने लगता है। जबकि मनुष्य जीवन तो देव दुर्लभ है। इसे सार्थक बनाने के लिए आत्म मंथन करते हुए भगवान की भक्ति में समय लगाना चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

सूर्य चलने लगा अकेला

नरेश साहू के घर 8 साल पहले दूसरे बेटे ने जन्म लिया। परिवार को खुशी के साथ साथ दुःख भी हुआ। नवजात बालक का दांया पैर बांए पैर की अपेक्षा लगभग 7 इंच छोटा होने के साथ ही घुटने में किसी प्रकार का जोड़ नहीं था। यह स्थिति आगे जाकर इसके लिए बड़ी मुश्किल बनने वाली थी। दुर्ग (छत्तीसगढ़) जिले की पथरिया तहसील के भेड़ेसरा गांव में रहने वाले गरीब किसान नरेश साहू ने अपने इस बेटे को 2–3 साल की उम्र होने पर रामपुर के एम्स सहित अन्य शहरों के अस्पतालों में दिखाया लेकिन कोई स्थाई उपाय नहीं मिला।

सूर्यकांत नामक इस बच्चे को पड़ोस के ही एक स्कूल में दाखिल करवाया गया। बच्चा पांव छोटे–बड़े होने के कारण चल नहीं पाता था। उसे गोद में अथवा साइकिल पर स्कूल छोड़ना पड़ता था। किसी ने कैलिपर तो किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी लेकिन गरीबी के चलते यह व्यवस्था नहीं हो सकी। तभी परिवार के किसी मित्र ने उन्हें उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान ले जाने की यह कहते हुए सलाह दी कि वहां निःशुल्क कृत्रिम पांव, कैलिपर अथवा उपचार जो भी सम्भव होगा वह संतोषजनक ढंग से हो जाएगा।

पिता नरेश साहू बच्चे को लेकर 19 सितम्बर को संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उसके पांव की स्थिति को देखते हुए इसका विकल्प विशेष कैलिपर को ही मानते हुए बच्चे को कैलिपर विभाग के हेड डॉ. मानस रंजन साहू के पास भेजा। जिन्होंने सूर्यकांत के लिए अत्याधुनिक मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस सहित विशेष डिजाइन का कैलिपर तैयार कर लगाया। जो बाएं पैर के बराबर ही था। बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ उसके वजन को झेलने और उसे चलने में यह एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस बड़ी मदद करेगा। कुछ दिन सहारे के साथ चलने के बाद नरेश अब खुद चलता है। पिता ने बताया कि वह अकेला ही स्कूल जाता और लौटता है। संस्थान ने उनके परिवार की चिंता को तो दूर किया ही बालक को भी आत्मविश्वास से भर दिया।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

महिने भर तो कार्यक्रम का प्रभाव लगभग निष्फल ही रहा मगर अगले महिने से इसका अच्छा प्रतिफल मिलने लगा। पहले महिने तो लागत के पैसे भी वसूल नहीं हुए मगर अगले महिने चैनल का शुल्क तथा कार्यक्रम के प्रोडक्शन का खर्चा निकल गया। इसके बाद तो डाक से, मनी आर्डरों से, चेक ड्राफ्ट से पैसा आने लग गया। शीघ्र ही खर्चा निकल कर अतिरिक्त आमदनी शुरू हो गई। इसका परिणाम यह निकला कि हॉस्पीटल में ऑपरेशन निर्बाध होने लगे। कैलाश मन मन सोचने लगा कि यदि यह राह नहीं मिलती तो हो सकता था कि ऑपरेशन बन्द करने पड़ते।

आस्था चैनल से जब इतना अच्छा परिणाम मिल रहा था तो कैलाश ने अन्य चैनलों को भी टटोलने की कोशिश की। उन दिनों आस्था के ही समकक्ष संस्कार चैनल भी था। इसका भी दर्शक वर्ग वही था जो आस्था का था। संस्कार वालों ने भी सहमति दे दी। दोनों चैनलों के लिये अलग–अलग कार्यक्रम बनाने लगे ताकि दर्शकों की संख्या में वृद्धि होती रहे। इसके बाद संस्था की आर्थिक स्थिति बहुत सुधर गई। पहले छोटे–छोटे खर्चों के लिये भी बार–बार सोचना पड़ता था, वह स्थिति नहीं रही। आर्थिक तरलता बढ़ जाने के विकास के कई कार्य जो अर्थाभाव से लटके हुए थे, वे कार्यरूप में परिणित होने लगे। इसके साथ ही संस्था के कार्यों का प्रचार प्रसार दूर दूर तक फैलता गया। दोनों चैनलों के कार्यक्रम न केवल भारत बल्कि पश्चिमी गोलार्द्ध में पड़ने वाले तमाम देशों में देखे जा सकते थे। इन देशों में जहां जहां भारतवंशी रहते थे, वे अत्यन्त चाव से ये चैनलें देखते थे।

संस्था की प्रसिद्धि बढ़ती गई तो शल्य चिकित्सा के शिविर लगाने के निमन्त्रण भी आने लगे। काम बढ़ता गया मगर योग्य डाक्टरों का अभाव भारी चुनौती थी। डॉक्टर तो बहुत ज्यादा थे मगर पोलियो का काम जानने वाले कम ही थे। बाहर आना जाना भी बढ़ता गया। एक शिविर अण्डमान–निकोबार द्वीप में लगाया तो एक कलकत्ता के बड़ाबाजार स्थित बियाणी धर्मशाला में।

अंश - 200